वर्वां halten: एवं जना मृह्णाति MåLAV.16,6. खलमन्यथा मृहीता 19. खा-र्घलमेव वीजमिति गृह्णाण Sch. zu Ġalm. 1,1,2. सर्वस्य तपसा मूलमाचारं जगृङ: परम् M. 1,110. पिर्हासविजात्त्पतं परमार्थेन न गृह्यतं। वच: für Ernst halten Çåx. 51. Madbus. in Ind. St. 1,24. — 25) meinen, darunter verstehen: घुशब्देन घुसंत्रका: षद्धातवा ५त्र गृह्यते P. 8,4,17,Sch. Sidde. K. zu P. 8,2,44. — Vgl. गर्भ, गृम् १६६., गृह्, यह, याभ, याह, याहिन्, याला.

- caus. 1) greifen —, festhalten lassen: पत्नेण ग्राक्षिता Suça. 1,101, 6. पेरिका क्याचित — ग्राक्यिता Daçak. in Benr. Chr. 197,4. Jmd Etwas ergreisen lassen: (गन्धर्वान्) म्रातायं ग्राट्यामास समत्याजयदाय्धम् RAGB. 15,88. (तम्) पार्थिवकन्याना पाणिमग्राक्यत् (bei der Heirathscerimonie) 17, 3. Daher Jmd (acc.) ein Mädchen (acc.) zur Frau geben: 됫-याचितारं न कि देवदेवमितः मुता ग्राक्यितं शशाक Кимаваз. 1,53. — 2) Jmd einsangen —, gefangen nehmen lassen: रुर्तारं प्राक्येनरम् Jagn. 2, 169. (ता) ग्राकृपिता वान्है: R. 6,1,21. तस्कर्तनार्थपतिर्ग्रास्थत Dagak. in Benf. Chr. 193, 15. — 3) ergreifen lassen (caus. zu यम् 3.): वर्तणेन TS. 2,1,4,4. 6,4,2,4. TBR. 1,6,4,1. निर्स्टत्या TS. 6,2,6,4. मृत्यूनी 7,2, 3,3. श्रमेण प्रारुपिष्यंश्च वृद्धे कर्णम् MBu. 8,3281. — 4) rauben —, fortbringen lassen: तदवस्थितद्रव्यं ग्राक्षिता Hit. 107,20. West.: capere, potiri. — 5) Imd Etwas empfangen lassen, übergeben: नैनामग्राङ्घि-वात्रागतव्यम् Makku. 55, 21. म्रनेनैव तदभ्यर्ध्य प्राक्ति। ऽकं प्रतिप्रकृम् Кателя. 24,186. मद्राक्तित्वदिभज्ञानिचक्क Daçar. in Benf. Chr. 192, 11. गाः प्रावाता गर्भ प्रारूपति Vop. 18,7. म्रासनम् Jmd (acc.) einen Sitz einräumen, neben sich setzen heissen: (तम्) ग्राक्यामास संश्रमानिज्ञमासनम् RAGA-TAR. 5, 306. (तेन) लमासनं ग्राव्तिः VIKR. 35, 3. — 6) Jmd sich Etwas wählen lassen: स नदीमीर्गमिजियकत् । तास्ताः स्वेच्छान्सारेण Rida-Tan. 5, 102. — 7) Imd sich mit Etwas (instr.) beschäftigen lassen: 知一 संस्तत्र ग्राक्तिसतीः (ग्रमात्यैः) सर्वे वर्णा स्वकर्मभिः R. Gors. 1,7,14; vgl. u. শ্বন্ am Ende. — 8) Imd Etwas lernen lassen, belehren, beibringen, mit Etwas vertraut machen; mit doppeltem acc.: म्राचार्य म्राचार्र ग्राक्यात Nia. 1, 4. इदं शास्त्रं त् कुलांसा मामेव स्वयमादितः। विधिवद्वाक्यामास M. 1,58. R. 1,4,4. 5,1,61. Arć. 4,58. MBH. 3,1262. (तान्) 羽福川田 — 却-क्यामास 1,5219. स्रस्त्राणां पर्मं वलम् । ग्राक्तिस्वं मकेन्द्रेण 3,12195. HIT. 7,21. Buag. P. 1,3,41. 3,4,31. 5,9,5. 7,5,26. Burn. Intr. 48. Vop. 5.5. ग्राक्तियता तु तं स्वार्वे मार्जारं मूचिनस्तवा MBn. 12,4994. 1,6238. म्राक्षित्राक्ष्मात्मानं ततो द्राधा च ता प्रीम् । संप्राप्तः sich vertraut machen, Kenntniss nehmen von Allem (WEST.: eripere, servare) 3, 16267. - 9) med. = simpl. Daltur. 16, 49, v. l.

— desid. तिघ्वति P. 1,2,8. 7,2,12. Vop. 19,5.6. 1) zu ergreifen —, zu packen im Begriff stehen: जापापा: पाणि तिघ्वत् Gobb. 1,1,8. 20. धावते तिघ्वति MBb. 4, 1269. R. 6, 36, 91. तिघ्वति मक्तिसेको गन्जानामित्र यूत्रम् MBb. 1,5482. तिघ्वतमाण 4,458. — 2) zu entreissen im Begriff stehen Bhag. P. 1,17,25. — 3) mit den Sinnen fassen wollen, zu erkennen sich bestreben Ait. Up. 3,3. fgg. Bhag. P. 2,10,20.22. 4, 29,4.

- intens. जरीगृह्यते P. 6,1,16, Sch.
- म्रति 1) über die Zahl schöpfen: त र्तानितम्राङ्गान्दरमुस्तानत्यम्-ह्मत तब्देनानत्यमृह्मत तस्मार्तियाच्या नाम Çat. Br. 4,5,4,2. TBr. 1,3,

2,1. Çîñku. Ça. 10,2,6. 3,14. — 2) überflügeln, übertreffen: चारित्रेण oder चारित्रतो ऽतिमुक्तते P. 5,4,46, Sch. — Vgl. स्रतिग्रङ् fgg.

- 🗕 म्रन् 1) im Rauben folgen: तिप्रं गोपान्समासाख गृह्धत् विप्लं धन-म्॥ — वयमप्यन्गृह्णीमा दिधा कृता वद्वयिनीम्॥ MBH. 4,996. — 2) halten, stützen: ज्यातिर्गणाः प्रकृतिपृष्ठषसंयोगान्गृङ्गीताः Buic. P. 5,23,3. Uebertr.: यदद्रातं तदेवाक्ं स्पृशामीत्यादिप्रत्यभिज्ञानुगृक्तीतेन — प्रत्यन्-मानेन Sch. zu Kap. 1,35. — 3) aufnehmen: इयं वै प्रजा प्राभवंत्रीर्न्ग्-副而 TS. 1,7,2,3. — 4) gütig aufnehmen, sich gnädig erweisen, gewogen sein, seine Gewogenheit an den Tag legen, beglücken; mit dem acc. der Person: सम्राद्धतावो ५र्नु मा गृभाय P.V. 2, 28, 6. म्रन्यो म्रन्यमर्न् गृभ्णा-त्यनाः Einer äussert gegen den Andern seine Freude 7,103,4. मन्या-ह्मात्प्रजा सर्वाम MBn.1,3158. दएडेनापनतं शत्रुमन्गृह्णाति यो नरः। स म-त्यमुपगृह्णीयात 5623. म्रनगृह्णीघ मदनेन विमोक्तिम् R. 1,63,7. Pankiat. III, 136. KATHAS. 3, 19. VID. 112. BHAG. P. 3, 2, 33. 5, 18. 16, 19. MARK. P. 15,60. Daçak. in Benf. Chr. 189,8. 193,22. यथा न कश्चिदेनां मृज्ञाति त-यान्गृह्यताम् (impers.) 189,22. धन्यो ४ स्म्यन्गृङ्गीतो ४ स्मि MBn. 3,1666. R. 1,20,22, 47,22, 3,19,11, 4,17,54, Çâk. 28,16, 38,15, mit dem instr. der Sache, durch die man seine freundliche Gesinnung gegen Imd an den Tag legt, Jmd beglückt: म्रन्गृत्व म्व्हदर्ग भागैश्वर्यम्बन MBn. 1, 6099. (अचित्) स्रभीत्पामन्गृह्णासि धनधान्येन डुर्गतान् 2,205. स्रन्गृङ्गीता ऽक्मनया मध्यतः संभावनया Çâk. 95, 12. Ragil. 8, 85. Viki. 70, 14. Hit. 17, 6. 33, 12. PRAB. 68, 3. DAÇAK. in BENF. Chr. 183, 14. 201, 16. 知代刊 न्मह्मात् भवती beglücke den Sitz so v. a. geruhe dich zu setzen VIKI. 81, 4. mit dem gen. der Person: देवास्तस्यान्गह्नते Buag. P. 4,12,50. 29, 46. — 5) pflegen, hegen: (स्राप्त:) नित्यान्गृक्ति: स्यात् Âçv. GBUJ. 1,9. ये मानं मे ऽन्गृह्कत्ते। वीरवत्तमकर्त मा Çiñku. Çk. 15,27,1. म्रादित्या क् वै वास्यः प्राण उदयत्येष स्थेतं चात्षं प्राणमन्गृह्णानः Радскор. 3,8. — caus.: म्रासंस्तदान्म्रिक्ताः सर्वे वर्षााः स्वकर्मभिः R. 1,7,15. Schl.: singuli denique ordines, sua quisque munera obeundo, incrementa capiebant. Wenn die Form সন্মাইন sicher steht, dann muss dieselbe auf সন্-মুক্ zurückgeführt werden, da das caus. eine Länge erfordert. সন্ম-হিল könnte Gunst erfahrend, in Gunst stehend bedeuten. Westergaard, der die Richtigkeit der Causalform gleichfalls beanstandet, giebt derselben die Bed. benevole excipere. - Vgl. মন্মক fgg.
- समनु in Ordnung bringen: म्रवमुच्य किरीर स केशान्समनुगृह्य च МВн. 2,895.
- ऋप wegnehmen, abtrennen, abreissen: श्रृंशून् TS. 6,4,4,4. एकं तृ-णाम् ÇAI. BB. 1,8,3,16. 2,5,2,42. 4,1,3,19. KAIJ. ÇB. 9,6,6. 10,4,5. स ते विद्र: सक् वञ्चेण वाङ्गमपागृह्णात् MBH. 14,250.
- श्रपि zuhalten: मुखम् Air. Ba. 6,33. Çar. Ba. 3,8,1,15. नासिके 1,4,1,2. 4,2,2,11. काणा Килко. Up. 3,13,8. Auch mit Ergänzung von मुखम् oder नासिके: श्रपिगृत्यं स्मयते den Mund zuhaltend TS. 6,1,3,8. कुणपगन्धान्नापिगृङ्गीत सीमस्य कैष राज्ञा गन्धः vor dem Aasgeruch soll man nicht die Nase zuhalten Çar. Ba. 4,1,3,8. Vgl. श्रपिगृत्य, श्र-पिग्रात्य.
- म्रिनि 1) ergreifen: मन्वालिका च बलवर्निगृत्य चएडवर्मणा परिणे-तुमात्मभवनमानीता Daçak. in Best. Chr. 201, 3. an sich nehmen, aufnehmen (vom Boden): म्राज्यं च स्तम्बयृतुम्यु क्रित्युमि च गृह्णाति TS. 1,6,